2

छाया प्रकाश द्वारा स्थिर वस्तु चित्रण

स्थिर वस्तुओं के भिन्न-भिन्न आकारों का चित्रण, जिसमें उस वस्तु विशेष का आकार रंग, रूप, कठोरता, कोमलता इत्यादि जो भी उस वस्तु के गुण हो, सुसज्जित ढ़ंग से संयोजित कर उनका चित्रण करना स्थिर वस्तु-चित्रण (स्टिल लाइफ चित्रण) कहलाता है। स्टिल लाइफ में फोटोग्राफ की भांति किसी भी चित्र को हूबहू दर्शाकर आकार और वस्तु के अनुपात एवं सन्तुलन के साथ-साथ छाया, प्रकाश और रंग-संगति को ध्यान में रखते हुये चित्रित किया जाता है।

स्टिल लाइफ चित्रण के लिए कुछ तत्वों का समावेश मुख्य माना जाता है। कला के मूलतत्व जैसे बिन्दु, रेखा, अनुपात, आकार, रेखांकन, दृष्टि क्रम, संयोजन, माप, संतुलन, प्रकाश व छाया इत्यादि हैं। स्टिल लाइफ चित्रित करने के लिए इनमें को ध्यान में रखकर वस्तु को उचित स्थान प्रदान कर, एक निश्चित दूरी पर स्थिर बैठकर रेखांकन किया जाता है। स्टिल लाइफ अध्ययन से शिक्षार्थी के अवलोकन करने की क्षमता बढ़ती है। गहन अध्ययन का अवसर मिलता है: वस्तु के सूक्ष्म अध्ययन के अवसर के साथ-साथ उसकी मूलभूत विशेषताओं के आधार पर निर्दिष्ट वस्तु का त्रि-आयामी चित्रांकन स्टिल लाइफ में संभव होता है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप :

- कला के मूल तत्वों की जानकारी प्राप्त कर रेखांकन कर सकेंगे;
- स्थिर वस्तु में प्रयुक्त साधन सामग्री की जानकारी प्राप्त कर उसका उपयोग कर सकेंगे;
- रेखांकन के साथ-साथ शेडिंग तथा छाया-प्रकाश के प्रभावों का दृश्यांकन कर सकेंगे;
- वस्तु के गहन अध्ययन एवं अवलोकन क्षमता का विकास कर सकेंगे;
- पाठ के अंतर्गत दिए गए विभिन्न चरणों में दृश्यांकन से अवगत होकर एक सही एवं संपूर्ण स्टिल लाइफ चित्रण कर सकेंगे।

2.1 स्थिर वस्तु चित्रण में प्रयुक्त कला के मूल तत्व

किसी भी वस्तु चित्रण के लिए उसके बाहरी रूप को समझना आवश्यक होता है जिसे आकार कहते हैं, जो आयाताकार, वर्गाकार, गोलाकार, त्रिभुजाकार इत्यादि हो सकते हैं। हम अनेक प्रकार के रूप, जैसे- मनुष्य, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे इत्यादि को रेखांकित करते हैं। बनाई गई आकृतियाँ वास्तविक आकृति की नकल होकर भी वास्तविक का बोध कराती हैं।

किसी भी रेखांकन में परिप्रेक्ष्य का बहुत महत्व होता है। आकार-प्रकार, रूप-रंग, दाये-बायें, ऊँची-नीची, दूरी-सामीप्य ये ही दृष्टिगत होकर स्वाभाविक चित्र के क्रम को दर्शाता है। प्रकृति में प्रत्येक वस्तु दृष्टि पथ में पारदर्शी वायुमंडल के माध्यम से देखी जाती है। किसी भी वस्तु के रूप-रंग, उसकी दूरी को देखने का माध्यम वस्तु पर पड़ने वाले प्रकाश की मात्रा पर निर्भर करता है। जैसे-जैसे वस्तु हमारी दृष्टि से दूर होती चली जाती है उसका रूप क्रमशः छोटा होता चला जाता है और अंत में वह एक बिन्दु सी प्रतीत होती है। वस्तुओं का रूप वास्तव में एक जैसा होता है पर हम उसे एक जैसा देख नहीं पाते हैं और किसी भी दृश्य का हम वैसा ही चित्र बनाते हैं जैसा कि हमें दिखाई देता है। यही परिप्रेक्ष्य स्टिल लाइफ में मुख्य भूमिका निभाता है और स्टिल लाइफ अंकन में परिप्रेक्ष्य का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है।

स्टिल लाइफ चित्रण के लिए स्थान विभाजन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सर्वप्रथम हम चित्र फलक का उचित स्थान निर्धारण करते हैं। चित्र बनाने से पहले एक केंद्र बिंदु निर्धारित करना आवश्यक होता है, जो सम्पूर्ण चित्र को पूरा करने में सहायक होता है। यह ध्यान रखने योग्य होता है कि चित्र कागज के बीच में और आकार के अनुरूप क्षैतिज अथवा लंबवत हो।

किसी भी वस्तु के रेखांकन में अनुपात एवं संतुलन होना आवश्यक होता है। रेखांकन में संतुलन उसमें रेखा, आकार, रंगों, छाया-प्रकाश जैसे तत्वों द्वारा निर्धारित होता है। संतुलन के द्वारा व्यक्ति अथवा वस्तु के आकार के अतिरिक्त उसको रंग, भार, घनत्व/क्षेत्र को दिखाने में समर्थ होता है। रंगों को छाया-प्रकाश एवं हल्के व गहरे प्रभावित करती हैं। संतुलन स्थिर वस्तु चित्रण का एक ऐसा गुण है जिससे संतुलन में स्थायित्व एवं समतुल्यता आती है। समतुल्यता के अभाव में सम्पूर्ण संयोजन लड़खड़ाता-सा प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त एक सही स्थिर वस्तु-चित्रण में उचित माप की भी आवश्यकता है। यह माप मात्र रेखा, बिन्दु और स्थान को ही विभाजित नहीं करता अपितु चित्र में संतुलन को भी दर्शाता है। उचित माप के अभाव में वस्तु का छोटा-बड़ा रूप स्पष्ट नहीं होगा और यह रेखांकन अनुपातिक तौर पर उचित नहीं माना जाएगा।

किसी वस्तु के धरातलीय गुण अथवा बनावट के भी स्थिर वस्तु चित्रण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस धरातलीय गुण के द्वारा हम वस्तु के वास्तविक रूप को दर्शा सकते हैं। स्टिल लाइफ में टैक्सचर अथवा बनावट दर्शाने के लिए रेखा, रंग, टोन (संगति) के उचित समावेश का उपयोग होता है। इनके प्रयोग से बनाया रेखांकन हूबहू प्रतीत होता है।

इसकी परिपूर्णता का अंतिम चरण छाया-प्रकाश का संयोजन होता है। किसी भी वस्तु को हम प्रकाश किरणों के कारण ही देख सकते हैं। वस्तु के ऊपर पड़ने वाली प्रकाश की दिशा और

स्थिति, वस्तु में छाया का निर्माण करती है और यह छाया और प्रकाश का संयोजन किसी भी चित्र में सजीवता और भार प्रदान करने में सहायक होता है।

2.2 स्थिर वस्तु (स्टिल लाइफ) चित्रण की विधि : वस्तु की माप

वस्तु को निर्दिष्ट स्थान पर रखकर, एक निश्चित दूरी पर बैठकर, दायें हाथ में पेंसिल को सीधा पकड़कर एक आँख बंदकर, हम वस्तु का सही माप निर्धारित करते हैं एवं उसका चित्र बनाना प्रारंभ करते हैं। स्टिल लाइफ चाहे पेंसिल शेडिंग, क्रेयॉन-पेस्टल रंग अथवा जलरंग, किसी भी माध्यम से बना रहे हों, प्रथम चरण में हम पेंसिल द्वारा माप लेकर ही रेखांकन प्रारंभ करते हैं जिससे चित्र का उचित आकार संयोजन, अनुपातिक संतुलन और स्थान भी निर्धारित हो सके।

2.2.1 आवश्यक सामग्री

ड्राइंग बोर्ड, ड्राइंग पिन, पेपर, पेंसिल (HB, 4B, 6B) पेस्टल रंग, जलरंग, ब्रुश (सं. 2, 4, 8, 10), कलर पैलेट, रबर, पेंसिल कटर आदि।

अभ्यास 1

पेंसिल द्वारा स्थिर वस्तु (स्टिल लाइफ) चित्रण

प्रथम चरण

सर्वप्रथम वे सारी वस्तुएँ जो हमें स्टिल लाइफ के लिए प्रयोग करनी हैं, उनको एक निश्चित स्थान पर संयोजित कर लें। उसके बाद हल्के रंग वाली पेंसिल के द्वारा हल्के हाथ से सामने रखी हुई वस्तुओं का एक बिंदु निर्धारित करते हुए उनके आकार के अनुरूप रेखांकन करें। सभी वस्तुओं को पूरी तरह बनाने के बाद फालतू रेखाओं को मिटाकर रेखांकन स्पष्ट कर लें।

चित्र 2.1

द्वितीय चरण

बनाए गए रेखांकन में अब हम पेंसिल द्वारा छाया प्रकाश के अनुरूप शेडिंग करना प्रारम्भ करते हैं। प्रारम्भ में छायांकन करते हुए प्रकाश वाला हिस्सा छोड़कर बाकी सारे भाग पर शेडिंग करना

शुरू करते हैं। शेडिंग की टोन को हल्का-गहरा करने के लिए हाथ के दवाब को कम ज्यादा करने के साथ-साथ 4बी पेंसिल हल्की टोन के लिए तथा गहरी टोन के लिए 6बी पेंसिल का प्रयोग करते हैं।

चित्र 2.1(क)

तृतीय चरण

यह स्टिल लाइफ चित्रण का अंतिम चरण होता है, इसमें पूरे चित्र को अंतिम रूप प्रदान करते हैं। चित्र के प्रत्येक हिस्से को बहुत ध्यान से देखते हुए गहरी और हल्की (शेडिंग) छायांकन के द्वारा त्रि-आयामी प्रभाव प्रदान करने का प्रयत्न करें। आगे की वस्तु पूरी तरह से स्पष्ट और पीछे की वस्तु को धुंधला दिखाकर परिप्रेक्ष्य को उभारें। गहरी एवं हल्की (शेडिंग) छायांकन के द्वारा चित्र के प्रत्येक हिस्से को स्पष्ट करते हैं। चित्र पूरा करने के बाद सभी फालतू रेखाओं को मिटाकर चित्र को अंतिम रूप प्रदान करते हैं।

चित्र 2.2(ख)

अभ्यास 2

पेस्टल रंगों द्वारा स्थिर वस्तु चित्रण

प्रथम चरण

सर्वप्रथम जिन वस्तुओं को चित्रित करना है उनका चयन और संयोजित कर लें। वस्तुओं को आकार के अनुरूप ही रखना चाहिए। अपने पेपर को ड्राइंग बोर्ड पर लगाकर, एक निश्चित दूरी पर बैठकर, बताए गए तरीके द्वारा माप लें। एक केंद्र बिंदु बनाकर चित्र को बनाना प्रारंभ करें। सारी वस्तुएँ बनाने के बाद स्पष्ट रेखा के द्वारा उन्हें अंतिम रूप प्रदान करें। फालतू रेखाओं को मिटा दें।

चित्र 2.2

द्वितीय चरण

इस चरण में बनाए गए चित्र में पेस्टल रंग द्वारा रंगांकन प्रारम्भ करते हैं। रंगांकन हमेशा हल्के रंग से गहरे रंग की तरफ किया जाता है। छायांकन करते हुए अधिक प्रकाश वाले क्षेत्रों को ऐसे ही छोड़ दिया जाता है, शेष भाग में पड़ने वाली छाया के आधार पर हल्की शेडिंग देते हुए, पूरे चित्र में हल्के हाथ से छायांकन करें।

चित्र 2.2(क)

तृतीय चरण

इस चरण में हम चित्र को अंतिम रूप प्रदान करने के लिए हल्की और गहरी शेडिंग देते हुए रंगों के माध्यम से त्रि-आयामी प्रभाव देने के साथ-साथ परिप्रेक्ष्य भी दर्शाने का प्रयास करते हैं। पृष्ठभूमि को अधिक गहरी शेडिंग देते हुए इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि वह चित्र के अन्य भाग से अलग दिखाई दे। छायांकन करते हुए रंग के गहरे-हल्के प्रभाव के द्वारा चित्र को अंतिम रूप प्रदान करते हुए समाप्त करते हैं।

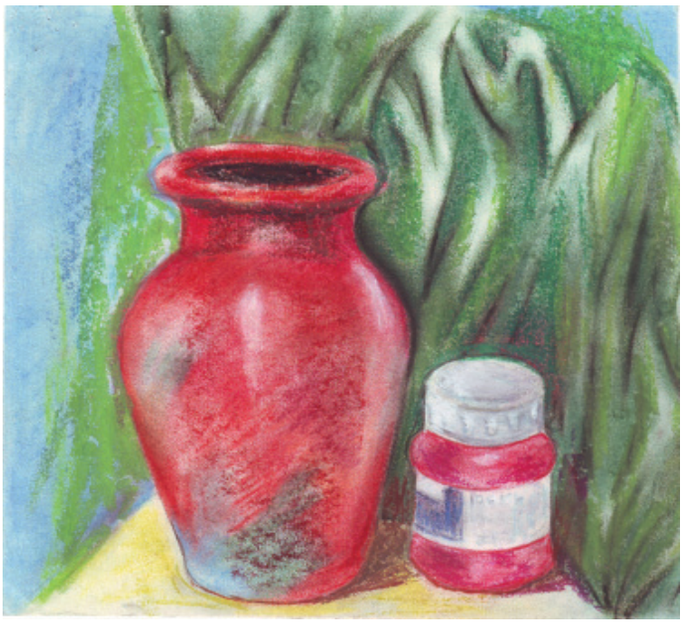

चित्र 2.2(ख)

अभ्यास 3

जलरंगों द्वारा स्थिर वस्तु का चित्रण

प्रथम चरण

सर्वप्रथम हमें जिन वस्तुओं का चित्रण करना है, उन्हें एक निर्दिष्ट स्थान पर संयोजित कर देते हैं। इसके पश्चात एच.बी. पेंसिल द्वारा हल्के हाथ से सामने रखी हुई वस्तुओं को अपने ड्राइंग बोर्ड पर लगे पेपर पर बनाना शुरू करते हैं। चित्र को बनाने से पहले उसके आकार और माप से पूरी तरह अवगत होना चाहिए। चित्र हमेशा पेपर के बीच में ही बनाना चाहिए। पेपर के चारों ओर बराबर स्थान छोड़ना चाहिए। चित्र को उनकी मूल विशेषताओं के आधार पर उचित रूप से हूबहू बनाकर फालतू रेखाओं को मिटाकर स्पष्ट कर लेना चाहिए।

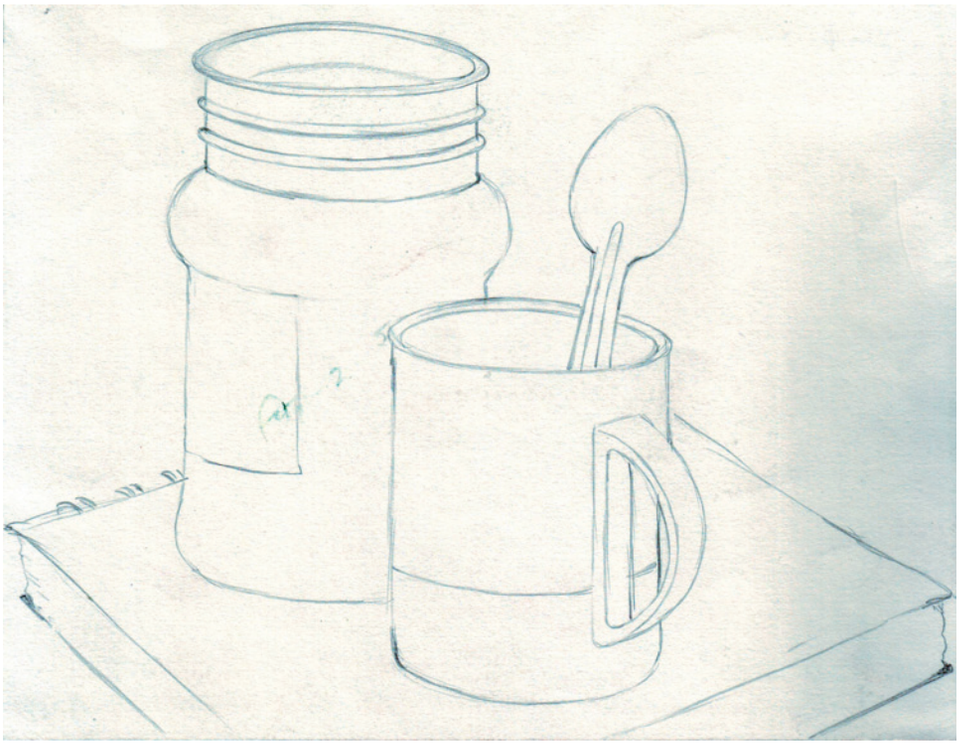

चित्र 2.3

द्वितीय चरण

इस चरण में हम बनाए गए रेखांकन में जल रंग भरना शुरू करते हैं। प्रथम सतह बिल्कुल हल्के रंग की होनी चाहिए। इससे चित्र में सही टोन को निकाला जा सकता है। इस चरण में चित्र में एक जैसा हल्का रंग भरते हैं। मात्र कुछ जगहों पर ही हल्का गहरा रंग भरते हैं। ज्यादा प्रकाश वाले भाग को ऐसे ही छोड़ देते हैं।

चित्र 2.3(क)

तृतीय चरण

इस अंतिम चरण में चित्र के प्रत्येक भाग को ध्यानपूर्वक देखते हुए तथा छाया प्रकाश के प्रभाव का अध्ययन करते हुए विभिन्न टोन निकालना प्रारम्भ करते हैं। इसके लिए चित्र के एक भाग का छायांकन करते हैं। रंगों के प्रभाव द्वारा गहरी और हल्की तान देते हैं। ज्ञात रहे कि रंगों को गाढ़ा व हल्का करने में जलरंग की वास्तविक पद्धति उसकी पारदर्शिता प्रभावित न हो। रंगों की तान हल्की और सुंदर त्रि-आयामी रूप को दर्शाने वाली हो। चित्र के प्रत्येक हिस्से को पूरा करते हुए अंतिम रूप प्रदान करें।

चित्र 2.3(ख)

आपने क्या सीखा

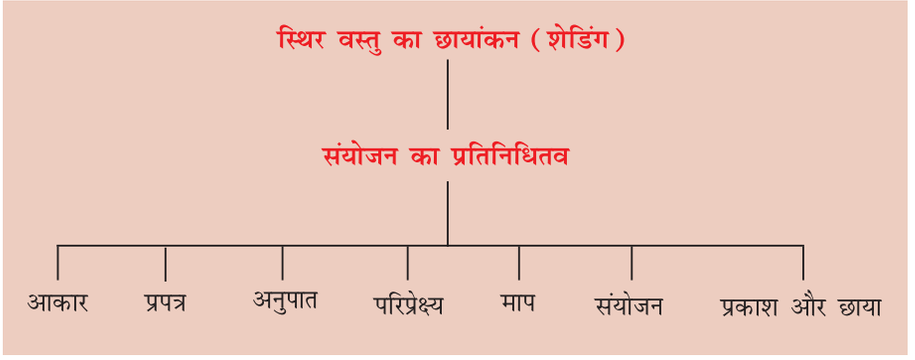

पाठांत प्रश्न

1. स्टील के तीन बर्तनों को संयोजित कर उनका पेंसिल से रेखांकन करें।
2. पीतल और प्लास्टिक के बर्तनों को संयोजित कर पेस्टल रंगों से उनका स्थिर (स्टिल लाइफ) चित्रण करें।

3. चीनी-मिट्टी की केतली, कप एवं प्लेट को संयोजित कर जलरंगों से उनका चित्रण करें।
4. एक ट्रे में पपीता, केले एवं सेव को संयोजित कर उन्हें जलरंग से चित्रित करें।
5. स्टिल लाइफ के चित्रण हेतु कौन-कौन सी सामग्री आवश्यक है?
6. स्टिल लाइफ चित्रण में किन बिन्दुओं का ध्यान रखना आवश्यक है?

शब्दकोश

परिप्रेक्ष्य	वस्तुओं की दूरी का ठीक-ठीक अनुपात दिखाना।
त्रिआयामी चित्रांकन	वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई के साथ गहराई को भी दर्शाना।
संयोजित करना	यथोचित प्रकार सजाकर रखना।
हूबहू	वास्तविक के समान।